Impact Factor : 2.034 **ISSN No. 2394-2878**

Journal of Socio-Educational & Cultural Research

(An International Interdisciplinary Refereed Journal)
Bi-Annual, Bilingual (English/Hindi)

Vol. 2, No. 5 **July-December, 2016**

Editor in Chief
Dr. Alok Kumar Kashyap
Associate Professor
Department of Sociology
M.B.S. P.G. College
Gangapur, Varanasi (U.P.)

Editor
Dr. Shivam Srivastava
Associate Professor
Department of Education
Kisan P.G. College, Bahraich

Published by
ANJANI JAN SEVA SAMITI
VARANASI

Editorial Board
Prof. O.P. Bhartiya (B.H.U.)
Dr. K.U. Raut (Maharashtra)
Dr. V.K. Lahari (B.H.U.)
Dr. Surendra Pal (Muzaffarnagar)
Dr. B.K. Singh (M.G.K.V.P., Varanasi)
Dr. Shikha Verma (Faizabad)

Advisory Board
Prof. S.R. Yadav (B.H.U.)
Prof. R.N. Tripathi (B.H.U.)
Dr. Amita Singh (Varanasi)
Dr. Amita Mohan (U.S.A.)
Dr. B.B. Malik (Lucknow)
Dr. S. Yadav (Faizabad)
Dr. S.K. Pandey (Mugalsarai)
Dr. Aruna Kumari (B.H.U.)
Dr. A.P. Singh (Uttarakhand)
Dr. P.K. Chaudhary (Bihar)
Dr. Vijay Bharti (Varanasi)
Dr. Anita (Varanasi)
Dr. D.K. Singh (Jharkhand)
Dr. A.P. Singh (Jaunpur)
Dr. Rahul Kumar Gupta (Varanasi)
Dr. Jai Prakash Yadav (Varanasi)
Dr. Parul Mishra (Farrukhabad)
Dr. Beerendra Kumar (Kushinagar)

Joint Editor
Dr. Mithilesh Kumar (Ranchi)
Binod Kumar (Dhanupur, Allahabad)

Managing Editor
Dr. Narendra Singh (Lucknow)
Dhananjay Bharti (Varanasi)
Varun Kumar Bhaskar (Varanasi)

Composed by
M. Computer
Kakarmatta, D.L.W., Varanasi
Mob. 8303968456

Office : A-77, Anjanipuram Colony, Karmajitpur, Sunderpur, Varanasi
Cell : 8858229047, E-mail : alokkumar078@gmail.com

© Publisher

1. All views and opinions expressed in 'Journal of Socio-Educational & Cultural Research' are the sole responsibility of the author concerned. Neither the Editor nor Publisher can in anyway, be held responsible for them.
2. All post of journal are without pay.
3. All disputes are subject to Varanasi jurisdiction only.

संपादकीय

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ हम मार्टिन लूथर किंग की इस विचारोक्ति को उद्घृत करना चाहेंगे जिसमें उन्होने कहा था– ''हमे सीमित मात्रा में निराशा को स्वीकार करना चाहिए, लेकिन असीमित आशा को कभी नही छोड़ना चाहिए।'' बदलते वैश्विक एवं राष्ट्रीय परिदृश्य में हम अनेक आशाओं एवं आशंकाओं के बीच असमंजसपूर्ण स्थिति में आ गए है। हम जीवन में हमेशा ही कुछ न कुछ पाना चाहते है, हम सबमे सदैव कुछ नया प्राप्त करने का लालसा बना रहती है। अंदर की चाह में नए लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर उन्मुख करती है। इससे मनुष्य निरन्तर कर्मशील और प्रतिपल सक्रिय बना रहता है। जिन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए वह निरन्तर सक्रिय है उनकी प्राप्ति न होने पर या लक्ष्य से चूक जाने पर मनुष्य की कार्यक्षमता एवं आत्मविश्वास में कभी आने लगती है। हम सभी के जीवन में ऐसा समय आता है जब हम खुद को हारा हुआ महसूस करते हैं ऐसे मे निराशा के भाव मन में आ जाते हैं। असफलता के कारणों का गहन अवलोकन करें तो पाएंगे कि कहीं न कहीं हमारी पात्रता उस लक्ष्य के लिए सम्यक नहीं थी। यह भी सत्य है कि आपके पास जो कुछ भी है उसके लिए आपमें कहीं न कहीं पात्रता अवश्य है। इसके विपरीत जो आपको प्राप्त नहीं हो सका उसकी पात्रता भी अभी विकसित करनी रह गयी है। कोई वृक्ष उस आकार प्रकार का है यह उस वृक्ष के बीज द्वारा ही निर्धारित होता है। इसीलिए निरन्तर कर्मपथ पर आगे बढ़ते रहना होगा। और अभीष्ट को प्राप्त करने के लिए यह हर हाल में आवश्यक है हम अन्तर्यात्रा करें, भीतर के सच को जाने और अपने अंदर पात्रता विकसित करें। पात्रता विकसित करने के पथ पर सफलता के लिए हमेशा यह सोच कायम रखनी है कि हमे आशाओं को अनन्त पंख देने हैं। रियो ओलम्पिक में भारत के लिए सिल्वर मेडल जीतने वाली पी.वी. सिंधु ने अपने अंदर इस उपलब्धि को अर्जित करने की पात्रता विकसित करने के लिए एड़ी चोटी का जोर अवश्य लगाया था बिल गेट्स दुनिया के सबसे धनवान व्यक्ति इसीलिए बन सके क्योंकि उन्होने स्वंय को इस योग्य बनाया। लक्ष्य चाहे जो भी पहले उसके लिए पात्रता पैदा करें।

देश इस समय परिवर्तन के दौर में है सरकार हमें कैशलेस बनाने में तुली है। हर ओर जनता में मिली जुली प्रतिक्रिया आ रही है। ज्यादातर देशवासी परिवर्तन के इस दौर में भ्रष्टाचार मिटाने के इस अभियान में स्वंय को कष्ट में रखकर, सरकार का सहयोग कर रहे हैं। कैशलेस होने से एवं कामकाज में प्रौद्योगिकी के पूर्ण प्रयोग से निश्चय ही आमूलचूल परिवर्तन होंगे, पारदर्शिता बढेगी हर लेन देन पारदर्शी होगा। कर चोरी न होने से देश प्रगति की राह पर जायेगा। पर इस सबसे अधिक जरूरी है कि हम सभी देशवासी स्वंय इस ओर अधिक ध्यानपूर्वक विचार करें कि हम अपने आप में कितने अधिक पाक साफ है? हम अपने भीतर के सच को अवश्य जानते हैं। अपनी पात्रता को समझते है मशीने तो कोई भेदभाव नहीं करती पर क्या हम पूर्ण रूप से स्वयं को समावेशी दृष्टिकोण वाले मनुष्य के रूप में पाते हैं? तो आइये! संकल्पित हों कि महान देश की इकाई के रूप में हम निज पात्रता विकसित करेंगे।

(डॉ0 आलोक कुमार कश्यप)
प्रधान सम्पादक

(डॉ0 शिवम् श्रीवास्तव)
सम्पादक

विषय सूची

1.	Multicultural Education in Secondary School: Issues and Challenges in Indian Context **Dr. Ajay Kumar Singh & Md. Akhtar Raza**	1-6
2.	Attitude of Students Towards Tuition **Dr. Alka Rani**	7-10
3.	Nehru and Socialistic Pattern of Society: Relevance **Dr. Anju Beniwal**	11-14
4.	SomeTribes in India: In Recent Scenario **Dr. Ramesh Ramrao Bainwad**	15-18
5.	A study of role conflict in relation to frustration tolerance of secondary school teachers **Dr. Ruchi Agarwal**	19-22
6.	An over view of the competencies, required to be a good teacher **Dr. Sharad Kumar Agarwal**	23-26
7.	Effectiveness of Computer Assisted Instruction for Remedial Teaching of Children with Cognitive Learning Disabilities **Dr. Shikha Chaturvedi**	27-34
8.	Vocational Interests of student in the Era of Unemployment **Dr. Shubhra Ojha**	35-38
9.	Open Educational Resources (OER) **Dr. Surendra Pal**	39-46
10.	Entrepreneurship in Education and Sports **Ranadheer Singh**	47-50
11.	जनपद अंबेडकर नगर के प्राथमिक विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन योजना के प्रति विभिन्न वर्ग के शिक्षकों एवं अभिभावकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन **डॉ0 नागेन्द्र कुमार**	51-56
12.	डा0 भीम राव अम्बेडकर की सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक प्रजातंत्र के संदर्भ में सामाजिक न्याय की वैचारिक अवधारणा **धनंजय भारती एवं डा0 छाया सोनी**	57-62
13.	खाद्य सुरक्षा कानून एवं भोजन का अधिकार (एक समाजवैज्ञानिक विश्लेषण) **संजय कुमार पटेल**	63-68
14.	लोक संस्कृति (एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण) **डॉ0 राकेश प्रताप शाही**	69-74
15.	महिला सशक्तिकरण एवं स्वयं सहायता समूहः एक समाजशस्त्रीय विश्लेषण रांची जिले के नामकुम प्रखण्ड के विशेष संदर्भ में **आभा मिश्रा**	75-82

16.	औद्योगीकरण का नगरीय विकास पर प्रभावः राँची एवं जमशेदपुर नगर के संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन **डॉ0 रेखा चौधरी**	83-88
17.	माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के शारीरिक स्वास्थ्य का अध्ययन **डॉ0 सुनील कुमार जोशी एवं दीपलता मिश्रा**	89-94
18.	ग्रामीण परिवेश की सामाजिक संरचना में परिवर्तन, हरिद्वार जिले के एक गांव का समाजशास्त्रीय अध्ययन **डॉ0 अमित मलिक**	95-96
19.	भारतीय परिदृश्य में महिला सशक्तिकरण की ओर बढ़ते कदम **डॉ0 दीपा पाठक**	97-100
20.	झारखण्ड राज्य में सदानों की सांस्कृतिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (राँची नगर के संदर्भ में) **डॉ0 गंगा केवट**	101-108
21.	भारत में पर्यावरण सम्बन्धित आन्दोलन और उसमें महिलाओं की भूमिका **डॉ0 जयदेव**	109-112
22.	भारत में आतंकवाद की समस्या **डॉ0 किशोर उत्तमराव राऊत**	113-120
23.	भारतीय महिला उद्यमिता की समस्याएं *(पूर्वांचल के विशेष सन्दर्भ में)* **डॉ0 महबूब आलम**	121-130
24.	वैश्विक भारत में दलित नारी **डॉ0 मोहित**	131-132
25.	मानवाधिकारवादी शिक्षा की संकल्पना **डॉ0 शिवम श्रीवास्तव एवं डॉ0 नित्या श्रीवास्तव**	133-138
26.	स्वतंत्र भारत में शैक्षिक अवसरों की समानता हेतु उठाये गये कदम **डॉ. सुनीता गुप्ता**	139-144
27.	गया श्राद्ध – कतिपय मिथक एवं उनका प्रत्याख्यान **डॉ. विमलेश कुमार पाण्डेय**	145-148
28.	भारत में मानवाधिकार की स्थिति और संरक्षण के तन्त्र **मनोज कुमार वर्मा**	149-152
29.	वैश्वीकरण के दौर में महिला सशक्तिकरण : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण **प्रियंका कुमारी**	153-158
30.	ग्रामीण भारत में गरीबी व बेरोजगारी निवारण का सषक्त साधन–मनरेगा **पूजा पल्लवी**	159-162
31.	गोरखपुर मण्डल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापकों की कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन **प्रो० (श्रीमती) शोभा गौड़ एवं ऋषिकेष विश्वकर्मा**	163-180

32.	झारखण्ड के आदिवासियों की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और नृजातीय अस्तित्व एवं अस्मिता **श्रद्धा रानी कश्यप**	181-184
33.	मध्यकालीन भारत में बाल षिक्षा के विकास का अध्ययन **उमा सैनी एवं डॉ0 आनन्द श्रीवास्तव**	185-192